International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बंजारा एक यायावर समुदाय

डॉ. पोरिका नागमणी

सहायक अद्यापिका (हिन्दी विभाग), शास्क्रीया स्नातक महाविध्यालय मुलुगु, मुलुगु जिला

बंजारा जिनका कोई ठौर-ठिकाना न था, न घर और न ही किसी स्थान से लगाव । यायावरों सा जीवन बिताते हुए आज यहां ठहर गए, कल का पता नहीं । कि पूरा कुनबा कहां पड़ाव डाले । यह सदियों से हिमालय से समुद्र तट-तक निर्भयतापूर्वक यात्रा करता रहा। उत्तर में हिमालय भी उसका सीमा निर्धारण नहीं कर सका। वह एशिया और यूरोप के देशों में पहुंचा और वहां भी यायावर बना रहा। नाचने के लिए पावों में घुंघरू बांधे बंजारा युवती किसी पेड़ के पास से गुजरती है तो दूर बैठे व्यक्ति को अनुभव होता है कि वृक्ष नाचने लगा है। अगर बंजारिनझोपड़ी में काम करती है तो छप्पर भी झनझना कर थिरकने लगता है। लेकिन आज स्थितियां बदल गई हैं। मकान बनने का काम चल रहा हो या सड़क बन रही हो, बंजारे पूरे क्षेत्र में मजदूरी करते देखे जा सकते हैं। आज के इस तथाकथित विकासवाद ने अपने समय के धनी इस समुदाय को एकाएक सड़क पर लाकर खड़ा कर दिया है। एक समय था जब बंजारे देश के अधिकांश हिस्सों में परिवहन, वितरण, वाणिज्य, पशुपालन और दस्तकारी से जुड़कर अपना जीवन बिताते थे। आपूर्ति के लिए जहां इनका रजवाड़ों में महत्वपूर्ण स्थान था, वहीं अकाल के बुरे दिनों में इनके मार्ग में पड़ने वाले गावों का हर व्यक्ति उत्सुकता से प्रतीक्षा करता था। भारत के मार्ग परिवहन तथा वाणिज्य का इतिहास बंजारों के प्रयासों का उल्लेख किए बिना नहीं लिखा जा सकता। जब इंटरनेट नहीं था तो बंजारा जाति ही गूगल मैप का काम करती थी।

राजस्थान के जैसलमेर, जोधपुर, चित्तोड़गढ़, पाली, कोटा, बूंदी के क्षेत्र में घूमने वाले बंजारे पहले सिंघ और पंजाब तक ही परिवहन की व्यवस्था करते थे। बाद में वे दूर-दूर तक जाने लगे। राजस्थान की बीहड़ रेगिस्तानी, निर्जल धरती तथा वहां की भयंकर शीत तथा उष्णता को

सहना राजस्थान के बाहर के व्यक्ति के लिए संभव नहीं था। राजस्थान के निवासियों को यहां की धरती जो सहनशीलता देती है, उसी के बल पर बंजारे तिब्बत से लेकर तमिलनाडु तक पहुंचते रहे। इसी वरदान के बलबूते पर यह हिमालय को लाकर अन्य देशों में पहुंचे। भारत के अधिकांश ग्राम बहुत से मामले में स्वावलंबी रहे हैं, किंतु एक समय था कि नमक के लिए उन्हें दूसरे का मुंह ताकना पड़ता था। गुजरात के समुद्री तट के अतिरिक्त राजस्थान के उत्तर में डीडवाना और हरियाणा के दो स्त्रोत से नमक पहुंचाते थे। यह नमक भी बंजारे ले जाते थे। यह लोग समूह में चलते थे। इन समूहों को'टोटलमेंट) कहते हैं। इनके साथ हजारों बैल होते थे जिन पर अपना माल लादकर ले जाते थे। इसके अलावा अपने टांडे की रक्षा के लिए इनके कुत्ते साथ चलते थे।

इन बजारों का विवाह एक लौकिक कोल है, जो बिना 'दापा (वर के दाम) के पूरा नहीं समझा जाता। विवाह होने के बाद यदि स्त्री किसी दूसरे पुरुष से संबंध स्थापित कर ले तो उसका पति हजांना पा सकता है, जिसको 'झगड़ा तोड़ना' कहते हैं। पुरुष को तलाक देने का अधिकार है, जिसको बंजारा लोग अपनी बोलचाल की भाषा में 'छेड़ा फाड़वू' कहते हैं। औरत भी अपने पति को छोड़कर अन्य व्यक्ति के साथ रह सकती है इसे 'नाता' कहते हैं। बंजारा महिलाओं की कशीदाकारी को कला भी देखते ही बनती है। इसका नमूना इनकी वेशभूषा ही है। दैनिक कार्यों में जो कपड़ा बंजारा स्त्रियां पहनती है उन पर कशीदाकारी का कार्य सर्वोत्कृष्ट 'होता है। बंजारनों का 'फेटिया (लहगा) जीन भागों में विभक्त रहता है। स्त्रियों की पूरी ओढ़नी कांच कशीदे, कौडियों और सिक्कों से सजी होती है। कपड़ों की तरह ही इनके आभूषण भी कलात्मक होते हैं। कानों में दांडी, इसके ऊपर बालियां, नाक में फूली, सिर पर भूलियाहोस, चौकड़ आदि, गले में मजियो और मौदों के गहने होते हैं, कभी-कभी रुपयों का बना हार भी इनके आभूषणों में जुड़ जाता है। हाथों में हाथी दांत के चूड़े और बाजू पर खांच पहना जाता है। पूरा शरीर गहनों से लदा रहता है। इनके गहने अल्यूमुनियम, पीतल, कांसे व चांदी के बने होते हैं। चित्तौड़गढ़ जिले के अकोला के पास उत्तर में दो कि.मी. दूर इन बंजारों की बस्ती हुआ करती थी पर अब यहाँ बहुत कम दिखाई देते हैं।

प्रारंभ में उत्तर भारत में बंजारे बड़ी तेजी से बसें, किंतु राजस्थान तथा दक्षिण भारत में वे अपनी संस्कृति को आज भी बहुत कुछ सुरक्षित रखे हुए हैं। इनकी महिलाओं की वेशभूषा देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि इस घुमंतू समाज ने विशेष प्रकार की संस्कृति विकसित की थी। आदिम जातियों में विशेष रूप से अनेक घुमंतू समुदायों की तरह बंजारों के बारे में अनेक तथ्य प्रचारित हुए हैं। विदेश में ही नहीं भारत में भी यह लोग अनेक रहस्यों से बसे समाज में जिज्ञासाओं की जगह आकांक्षाओं की सृष्टि करते रहे। शायद बंजारों ने कुछ घुमंतू जातियों की तरह इस कहानी को मान्यता देने की कोशिश की है कि ये राजपूत थे और मुसलमानों के आक्रमण के कारण उन्हें अपने मूल स्थान से दूर जाना पड़ा।

लगता है कि पहले राजस्थान बाद में सिंध और पंजाब में घुमंतू जीवन बिताने वाले बंजारों का कार्य क्षेत्र उस समय अचानक विस्तृत हो गया जब यहां तुर्क और अफगान आए। इन विदेशियों के आगमन के बाद बाहर के देशों से व्यापार अधिक होने लगा। उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने वाले मार्गों पर आवागमन बहुत बढ़ गया आंध्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तामिलनाडु में बसने वाले बंजारे पहले-पहल पंद्रहवीं सदी में बड़ी संख्या में दिखाई दिए थे। माना जाता है कि बंजारा जनजाति की भाषा लंबाणी राजस्थान के राज्य से आई हालांकि समय और क्षेत्र के साथ इसमें और भी भाषाओं के शब्द जुड़ते चले गए। तेलंगाना में बंजारों को लंबाणी, बंजारा और आंध्र प्रदेश में सुगाली भी कहा जाता है। यूरोप में बंजारे पहले-पहल स्पेन में 1484 ईस्वी में पहुंचे। यह बंजारे वर्तमान में वहां 'रोमा' या अन्य कई नामों से जाने जाते हैं।

होली इनका सबसे महत्वपूर्ण आयोजन है इस त्यौहार को बंजारे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। नाच-कूद, सुरापान और रागरंग के साथ त्यौहारों पर मनोरंजन करते हैं और अच्छा भोजन अपने घरों में बनाते हैं। फागुन में बंजारा महीना भर नाचता-गाता है। बनजारिन् •लड़कियां तीज बहुत अच्छी तरह मनात हैं। गीतों से सारा कुनबा गूंजता है। प बदलते समय में यह लोग

भी अपनी परंपरा से दूर होते जा रहे हैं। इनके गोत्र (खांद) में राठौर, चौहान, लंबाड़ी, खेतावत, रामावत जैसे राजपूती नाम भी मिलते हैं। विनोद राठौड़ के शोध के अनुसार बंजारा जाति भारतीय चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में से वैश्य वर्ण में आते थे जिनका मुख्य व्यवसाय आयात-निर्यात' का व्यापार था जिसमें शक्कर, मसाले, कीमती धातु जानवर आदि का व्यापार था प्रचीन समाज में बंजारा जाति के लोग घनी हुआ करते थे और इन्हें संपूर्ण ज्ञान प्राप्त था। गोत्र के अनुसार ही इनकी कुलदेवियां होती हैं। इनमें हिंगला, तुलजाबाई, मतराई, बोलांग, कंसाली आदि मुख्य देवियां हैं। चेचक होने पर यह लोग शीतला माता की पूजा करते हैं। इनके रीति-रिवाज, त्यौहार बरबस आपका मन मोह लेंगे। लोग इन पर बहुत भरोसा करते हैं। यह मेहनती होते. हैं पर इतने मेहनती होने के बाद भी यह लोग वनवासी होकर रह गए हैं। इनमें से न कुछ प्रतिशत अब शिक्षित हो रहे हैं पर घुमंतू होने के कारण अनेक सुविधाओं से यह वंचित रह जाते हैं।